P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनजातीय कला में तान्त्रिक प्रतीकों का महत्व

साक्षी गुप्ता
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,
दयालबाग, आगरा

सारांश

आरम्भ से ही मानव आदि शक्ति, दैवीय–चमत्कारों, जादू–टोनों आदि के प्रति आस्थावान रहा है। धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराओं में बंधे पर्व और उत्सव भारतीय जनजीवन में जीवन के प्रारम्भिक काल से अभिन्न अंग हैं जो स्वतन्त्र व समीकृत दोनो ही रूपों में प्रकट होते हैं। जनजातीय कलाओं में धार्मिक क्रिया–कलापों व अनुष्ठानों आदि से सम्बन्धित कलाओं की स्वभाविक अभिव्यक्ति हुई है। पारम्परिक रूप से जनजातीय कलाओं में जादू–टोने से सम्बद्ध कलाओं का विशिष्ट स्थान दिखता है। जनजातियों में जादू से सम्बद्ध क्रियायें जादू के दो स्वरूपों– काला जादू व सफेद जादू के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। अकुशल जनजातीय चित्रकारों ने ज्यामितीय रूपों, सीधी रेखाओं व सरल प्रतीकों को अभिव्यक्त किया है, जिसमें यथार्थता से ज्यादा प्रतीकात्मकता परिलक्षित होती है। कोणीय रेखायें, त्रिकोण, चतुर्भुज, वृत्त, बिन्दु, वर्ग आदि ज्यामितीय प्रतीकों के संग स्वास्तिक, अष्टदल कमल, कुम्भ, चक्र आदि धार्मिक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।

कलाकार की अभिव्यक्ति का स्वरूप किसी वस्तु या भाव में प्रदर्शित होतर है, जो प्रतीक बन कर कला की भाषा के रूप में प्रकट होता है। प्रकृति पर आधारित मानव ने सूक्ष्म सत्ता को पहचाना व उसे ज्यामितिक व अलंकारिक आकृति द्वारा रूप प्रदान किया।

मुख्य शब्दः तन्त्रिक प्रतीक, जनजातीय समूह, धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराएं।

प्रस्तावना

"A Tribe is a collection of families or group of families bearing a common name, members of which occupy the same territory, speak the same language and observe certain taboos regarding marriage, profession and occupation and have developed a well assessed system of reciprocity and mutuality of obligation."

-Dr. Mazumdar

जनजातीय एक प्रकार का समूह है जो एक ही प्रकार की भाषा, रीति–रिवाजों व संस्कारों का पालन करते हैं। इस समूह के अनेक उप–समूह होते हैं जो एक ही समुदाय, गाँव व क्षेत्र में रहते हैं।

जनजातीय शब्द के अन्य अनेक प्रकार हैं– Risely, Lacey और Elwin ने इसे "Aboiginals" के नाम से सम्बोधित किया है। Thakkar Bapa व Ajijt Mookerji ने इन्हें आदिवासी नाम दिया है। कुछ लोग इन्हें ''वनीय जातियां'' व ''वनीयजन'' बोलते हैं। भारत सरकार ने इन्हें ''अनुसूचित जन जाति'' का नाम दिया है।

अध्ययन का उद्देश्य

आज भी तन्त्र काला जादू की एक प्रक्रिया माना जाता है। इस विचारधारा का खण्डन करके एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करूँगी। तन्त्र आध्यात्मिक संस्कृति का विकसित रूप है साथ ही दर्शन में उत्कृष्ट है। जनजातीय कला में प्रतीकों की अभिव्यक्ति का अध्ययन करने का मेरा उद्देश्य प्रतीकों की अवधारणा, तकनीकी पक्ष व कलात्मकता का अध्ययन कर भ्रामक तथ्यों को प्रकाशित करने का प्रयास है। जनजातीय धार्मिक व दार्शनिक पद्धति तन्त्र का सामाजिक व कार्यात्मक विवरण देना है।

आदि काल से मानव अपने आन्तरिक व बाह्य सौन्दर्य को कला के माध्यम से भावों को व्यक्त करता आया है। मानव निर्मित आकृतियाँ केवल सौन्दर्य को ही अभिव्यक्त नहीं करती बल्कि मनुष्य की समूची कला और संस्कृति का संवाहक है। देश के विभिन्न राज्यों में निर्मित जनजातीय संग्रहालय जनजातियों के कला व जीवन शैली को उद्घाटित करते हैं। जनजातीय समूह ने अपने परिवेश में उपलब्ध विभिन्न संसाधनों से अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं। जनजातीयों में पीढ़ी दर पीढ़ी ईश्वरीय व दैवीय शक्ति को जानने की उत्सुकता व रुचि रही है या कहा जा सकता है

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कि एक आत्मिक बोध विकसित रहा है। आदिम समय से ही इन समूहों में परम सत्ता को जानने का आकर्षण संस्कार में समाया है। अपनी जातीय स्मृति रूपाकारों और अभिप्रायों को आदिवासी अपनी आकृतियों में उतारता है। अनुष्ठानों में बनने वाली आकृतियों तथा अलंकरणों को प्रत्येक आदिवासी अपनी परम्परा व रीति–रिवाजों के अनुसार बनाता है। जनजातीयों की कला अत्यन्त समृद्ध है, जिसकी विविधता देखकर आधुनिक मानव आश्चर्य से ठगा सा रह जाता है।

चित्र सं.–1 वूड्डा जनजातीय समूह (आन्ध्र प्रदेश)

अधिकांश जनजातियों का इतिहास 19वीं शती से पूर्व का उपलब्ध नहीं है। भारतीय तथा पश्चिमी विद्वानों ने 19वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में विभिन्न जातियों पर किये गये शोध से कई स्थानों पर जनजातीय कला के प्रमाण प्राप्त किये है। जनजातीय कला की खोज को लगभग 60–70वर्ष ही हुये हैं फिर भी जनजातीय कला ने कला की दुनिया में उसी प्रकार क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है जिस प्रकार हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की खोज से हुआ था। जनजातियों के अध्ययन, उनके विभिन्न संस्कारों, रीति–रिवाजों, कलात्मक सृजनता का अध्ययन सर्वप्रथम **Pigat** ने 1932ई॰ में किया। इसके पश्चात् Wecher, Copeland, Shri Nityanand Das, Dr. Freda Mookerjee व Ajit Mookerjee ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया। भारतीय चित्रकार Sankho Chaudhary, Pupal Jaykar व Enakshi Bhavani ने भी भारतीय जनजातीय कला को प्रकाश में लाने के लिये अथक प्रयास किये।

चित्र सं.–2 पिठौरा देव (गोण्ड जनजाति)

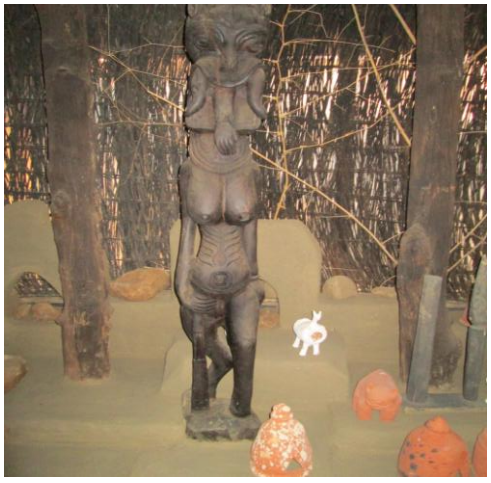

मनुष्य का धार्मिक अनुष्ठानों रीति–रिवाजों व तान्त्रिक गतिविधियों से अटूट सम्बन्ध रहा है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त विविध रूपों में अनुष्ठानों, रीति–रिवाजों व तान्त्रिक विधियों का उपयोग सर्वविदित है। जनजातीयजन ने अपनी आत्म रक्षा हेतु विभिन्न देवी–देवताओं, प्राकृतिक रूपों, विभिन्न मंगल प्रतीकों का निर्माण किया। जनजातीय समूह में उनके ईष्ट देवी–देवताओं की मूर्तियाँ निर्माण तान्त्रिक अनुष्ठानों के अन्तर्गत हुआ है। जनजातीय कला में जिन अलंकरणों व प्रतीक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, वे उनके किसी न किसी धार्मिक, अनुष्ठानिक और सामाजिक रीतियों से जुड़े होते हैं। आज भी यह प्रथा आदिवासी जनजातीय संस्कारों में देखी जा सकती है, जो अपनी वर्षों पुरानी परम्परा को जीवित रखे हैं। आज भी जनजातीय समाज में तन्त्र–मन्त्र, जादू–टोना, झाड़–फूँक आदि का प्रयोग बहुआयामी रूप में देखने को मिलता है चाहे वह दैनिक जीवन में हों या फिर विशिष्ट अनुष्ठानों में।

देश का बड़ा भाग बहुसंख्य आदिवासी जनजातियों व लोक समाजों का घर है। यहाँ आधे से अधिक भाग में आदिवासी निवास करते हैं। जिनमें गौण्ड, भील, बक्सर, कोरकू, बैगा, मराठा, मरासरी, उदम्बर, ऊजाली आदि संख्या में अधिक हैं सभी अपनी संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी पारम्परिक रूप से हस्तान्तरित करते आ रहे हैं। आदिवासियों का प्रकृति और पितरों पर कल्पनात्मक व मिथकीय रूप से अटूट विश्वास सदियों से चला आ रहा है जो उनके लोक नृत्य–संगीत, मूर्ति–शिल्प, चित्रों, टोटम चिन्हों, गोदना कला आदि के द्वारा उनकी संस्कृति के रूप मे परिलक्षित होता है। इनकी संस्कृति ही इनके जीवन की अनमोल धरोहर है। इनकी प्रत्येक रचना में इनके जातीय चिन्ह मौजूद रहते हैं।

आदिवासी अपने कष्टप्रद जीवन से त्रास्ता होते हुये भी नृत्य, संगीत और चित्रकला में इतने निमग्न होते हैं कि दूसरे आभावों का उन्हें लेशमात्र भी आभास नहीं होता है। लोक कलाओं के आनन्द में ही उनके जीवन की पूर्णता का लक्ष्य छुपा होता है। भविष्य की परवाह किये बिना अपने वर्तमान को नाच–गाकर और चित्रण करके अपने वर्तमान को वातावरण तथा जीवन को अलंकृत करते हुये खुशियों से भर लेते हैं।

चित्र सं.–3 पारम्परिक गोदना कला (बैगा जनजाति)

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आदिवासियों के जनजीवन से सम्बन्धित यदि कोई बात अधिक चर्चित व आकर्षक है तो वह है इनकी पारम्परिक शैली की कला।

चूँकि आदिवासी अन्धविश्वास और देवी–देवताओं में अधिक विश्वास रखते हैं, अतः इससे सम्बन्धित विषयों का चित्रण बहुतायत रूप सें देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त उनके वातावरण तथा उनके नित्य प्रति जीवन की फलकियां चित्रों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। विशेषतः एक ही प्रतीक की पुनरावृत्ति करते हुये लाभवृद्ध में अलंकृत करते हैं।

चित्र सं.–4 भित्ति चित्रण कला (गोण्ड जनजातीय)

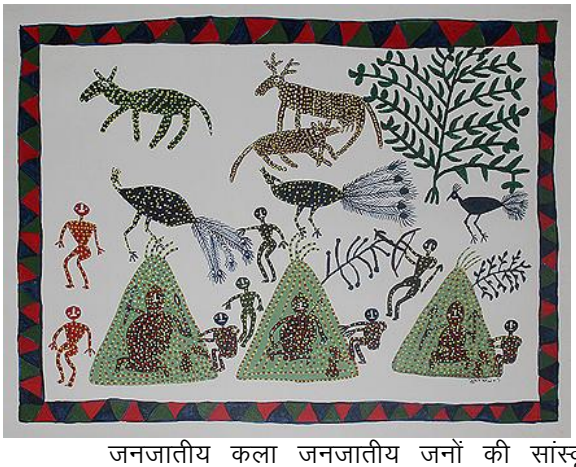

जनजातीय कला जनजातीय जनों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करती है। जनजातीय कला, कला की दृष्टि से सहज, स्वभाविक, उनके सरल जीवन और संस्कृति को व्यक्त करती हुई, साधारण परन्तु उच्चकोटि की होती है। ये जनजातियां अपनी कला परम्परा का निष्ठा से र्निवाह करते हुए, पारम्परिक प्रतीकों, मिथकों और अभिप्रायों की रक्षा करते आ रही हैं। ये अपनी कला का उद्घाटन प्रतीकों द्वारा करते हैं। प्रतीकों द्वारा जनजातीय जन सांस्कृतिक विरासत व मस्तिष्क की सृजनात्मकता को अत्यन्त सूक्ष्मता से प्रदर्शित करते हैं। कला के माध्यम से ये अपनी संस्कृति व रीति–रिवाजों का संकलन करते हैं। जनजातीय कला जनजातीय संस्कृति की आत्म–गाथा है। जनजातीय समाज की संरचना अनेक प्रकार की मान्यताओं, कल्पनाओं, नियमों, जादू–टोनों, अन्धविश्वास, तन्त्र–मन्त्र से मिलकर बनता है। कला जनजातीय समाज को शक्ति व अधिकार प्रदान करती है जो सामाजिक मान्यताओं व नियमों को संयमित करने व उनका मार्गदर्शन करने में सहायता प्रदान करती है। कला में प्रयुक्त प्रतीक व आकृतियाँ मानव की कल्पना को प्रस्तुत करते हैं। ये कल्पनायें समूह के लोगों की भावनाओं को प्रस्तुत करती है।

परम्परागत रूप से जनजातिय कलाओं में जादू–टोने से सम्बन्धित कलाओं का विशिष्ट स्थान रहा है। जनजातियों में प्राकृतिक विपदाओं जैसे– बाढ़, अकाल, महामारी आदि तथा रोगों से बचने, उनके निवारण व उपचार के लिये जादू–टोने का प्रयोग किया जाता है। जनजातियों में जादू–टोने से सम्बद्ध क्रियायें **काला जादू** व **सफेद जादू** के रूप में दृष्टव्य होती हैं।

चित्र सं.–5 टोना–टोटका के लिये निर्मित शिल्प (भील जनजातीय)

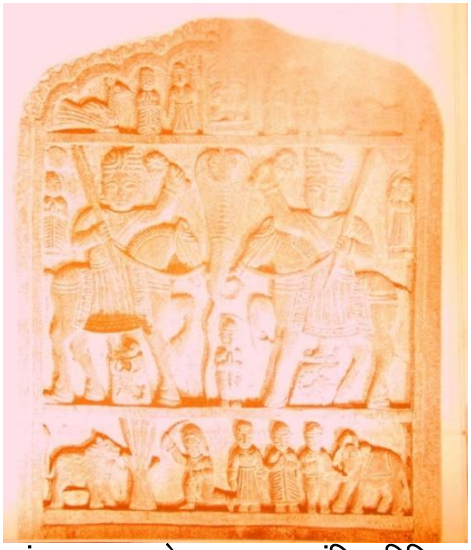

चित्र सं.–6 पुस्तक के आवरण पर अंकित विभिन्न प्रतीक चिन्ह

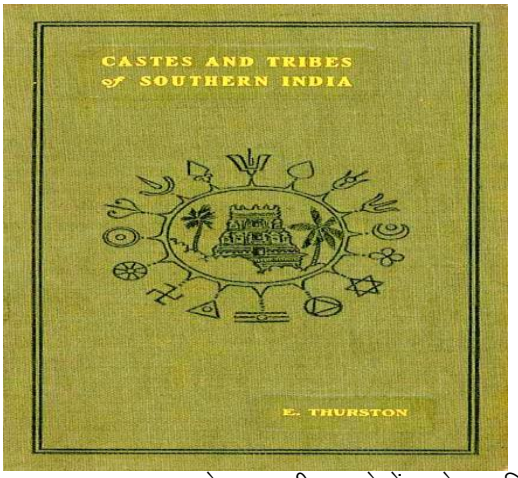

जनमानस को मानवीय रोगों से मुक्ति, भूत–पिशाच या प्रेत–आत्माओं के प्रभावों के निवारण एवं विषैले जीव–जन्तुओं के प्रभाव से व्यकित की सुरक्षा करने तथा अनेक प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति दिलाने के लिये **सफेद जादू** का प्रयोग किया जाता है। किसी व्यक्ति से प्रतिशोध लेने व अहित करने के लिये **काला जादू** का प्रयोग किया जाता है।

जनजातियों में प्रचलित विभिन्न संस्कारों, धार्मिक व तान्त्रिक अनुष्ठानों, उत्सव–पर्वों पर कुछ विशिष्ट चित्रों व चिन्हों का अंकन किया जाता है। इन जनजातियों चित्रों व चिन्हों में एक आदर्श निहित होता है। ये जनजातिय चित्र व चिन्ह **मांगलिक प्रतीक** भी कहे जाते हैं। जो कि जनमानस को आदिवासी के हृदय में निहित संवेदनाओं, शिक्षण व कुल की आस्था के विभिन्न आयामों के दर्शन कराते हैं। जनजातियों में अनेक प्रतीकों का अंकन प्रचलित है। अकुशल जनजातीय चित्रकारों ने ज्यामितीय विधान व सीधी रेखाओं से सरल प्रतीकों को अंकित किया है, जिसमें यथार्थता से ज्यादा प्रतीकात्मकता परिलक्षित

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

होती है। **कर्णीय रेखायें, त्रिकोण, चतुर्भुज, वृत्त** आदि ज्यामितीय प्रतीकों के संग **स्वास्तिक, अष्टदल कमल, कुम्भ, चक्र** आदि मंगल चिन्हों का प्रयोग किया जाता है। कलाकार की अभिव्यक्ति किसी वस्तु या भाव की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती है, जो प्रतीक बन कर कला की भाषा बन जाती है। प्रकृति पर आधारित मानव ने सूक्ष्म सत्ता को पहचाना व उसे ज्यामितिक आकारों द्वारा रूप प्रदान किया।

बिन्दु

पुराण, साहित्य, संस्कृति, कला आदि में बिन्दु के गहनतम प्रतीकार्थ व्यक्त हैं। लोक साहित्य, धर्म–दर्शन, तन्त्र–मन्त्र में बिन्दु सार तत्व के रूप में वर्णित है। बिन्दु प्रारम्भ का प्रतीक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि बिन्दु में ही त्रिदेव समाहित हैं व यह परमपिता शिव का संकल्प रूप है। **निमाड़ जाति** के लोग भित्ति पर सफेद पर काले बिन्दु लगाकर नाग व जिरोति की प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। तीन बिन्दु त्रि–शक्ति का सात बिन्दु अन्नपूर्णा माता का तथा पाँच बिन्दु पंच–परमेश्वर का प्रतीक माने जाते हैं। जनजातीय महिलायें घर की भित्ति व जमीन पर बिन्दु बना कर पंच देवों को स्थापित करती हैं।

बुन्देली संस्कृति में बिन्दु धार्मिक व सृष्टि रचना के आरम्भ का प्रतीक के साथ–साथ शिव–शक्ति का प्रतीक भी माना जाता है। बुन्देल क्षेत्र के चित्रों में ''बिन्दु सृजन का केन्द्रिय प्रतीक है, वह सृष्टि के केन्द्र है। साथ ही ब्रह्मा, विष्णु व महेश की शक्तियों की लयात्मक रूप ब्रह्मा भी बिन्दु ही है। वह ब्रह्माण्ड व आकाश का प्रतीक है।

चित्र सं.–7 भित्ति पर सफेद पर काले बिन्दु लगाकर नाग व जिरोति की स्थापना (निमाड़ जाति)

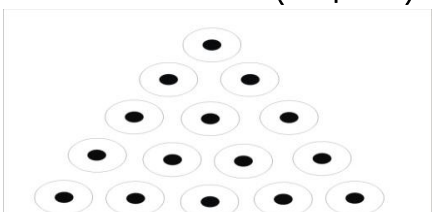

शून्य

बुन्देल संस्कृति में शून्य ब्रह्माण्ड तथा समय का प्रतीक माना जाता है। शून्य अनन्त है, शक्ति है तथा आकाश का द्योतक भी है। निमाड़ संस्कृति में शून्य को गोला या अण्ड कहते हैं। यह अण्ड ब्रह्माण्ड का प्रतीक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि सम्पूर्ण विश्व शून्य में समाहित है व शून्य संसार का द्योतक है।

रेखा

जनजातीय कला का आधार रेखा है। निमाड़ी संस्कृति के चित्रों में रेखा का सर्वाधिक महत्व है। रेखा को मन का प्रतीक माना है। समान्तर रेखा समानता का व खड़ी रेखा बंध का प्रतीक मानी जाती है। आड़ी रेखायें स्थिरता का प्रतीक हैं। एक दूसरे को काटती हुई रेखायें चरम मिलन का प्रतीक मानी जाती हैं। छत्तीसगढ़ क्षेत्र के जनजातीय समूह रेखा को गति, विकास व काल का प्रतीक मानते हैं। अनेक जनजातियों में रेखाओं द्वारा देवी–देवताओं के प्रतीक रूप को बनाया जाता है।

चित्र सं.–8 रेखा द्वारा निर्मित हनुमान देव का प्रतीकात्मक स्वरूप (बैगा जाति)

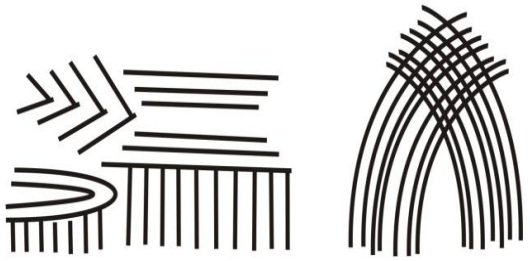

त्रिभुज

त्रिभुज अर्थात् त्रिकोण, ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का प्रतीक है। त्रिकोण त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु व महेश), त्रिगुण (सत्, रज व तमस), मन, कर्म व वचन का प्रतीक माना जाता है। सीधा त्रिभुज शिव व अल्टा त्रिभुज पार्वती का प्रतीक रूप माना जाता है। निमाड़ी जनजातीय चित्रों में त्रिकोण का सर्वाधिक प्रयोग होता है। मानवीय व पशु आकृति का आधार त्रिभुज ही होता है। निमाड़ी जनजातीय में पूज्यनीय जरोती माता के वस्त्र त्रिकोणाकार बनाये जाते हैं।

चित्र सं.–9 शिव व पार्वती का प्रकीक रूप

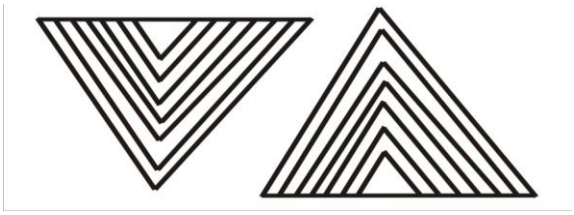

वृत्त

वृत्त अर्थात् परिधि में ब्रह्माण्ड समाहित है। वृत्त नाद, वायु व आकाश का प्रतीक है।

चतुर्भुज

चतुर्भुज चारों दिशाओं का प्रतीक माना जाता है। निमाड़ के सारे चित्रों के घर चैकोर ही बनाये जाते हैं। चतुर्भुज के चारों बिन्दु चार दिक्पालों का द्योतक हैं। नाग व जिरोती का अंकन भी चौकोर चोखटे में किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि चौकोर वस्तु नेत्रों को आनन्द प्रदान करती है। एक निमाड़ी कहावत में कहा गया है कि

''चार खुट मढुढी आ।
म्हारा जसो आदमी ती मिलगा।''

अर्थात् पृथ्वी के चारों कोनों में खोज लो, यदि मेरे जैसा मनुष्य मिल जाये।

चित्र सं.– 10 चारों दिशाओं का प्रतीक चतुर्भुज

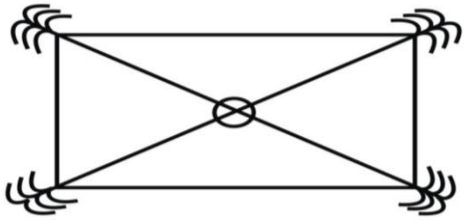

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वास्तिक

स्वास्तिक संस्कृति का प्रतीक चिन्ह है। स्वस्तिक के समान संस्कृति का ऐसा सारगर्भित, संक्षिप्त, सरल व आकर्षक चिन्ह विश्व में कोई होगा।

स्वास्तिक एक क्षैतिज व एक ऊर्ध्व रेखा के एक दूसरे को काटने से बनता है। दोनों रेखाओं के एक–दूसरे के काटने के स्थान पर मूल बिन्दु स्थित होता है। क्षैतिज रेखा स्त्री का व ऊर्ध्व रेखा पुरुष का प्रतीक मानी जाती है। चार रेखायें अग्नि, इन्द्र, वरुण व सोम को प्रदर्शित करती हैं। सभी धार्मिक अनुष्ठानों में स्वास्तिक का निर्माण शुभ माना जाता है। स्वास्तिक की उपस्थिति श्री गणेश की उपस्थिति मानी जाती है।

चित्र सं॰– 11 भित्ति पर निर्मित स्वास्तिक

चक्र

जनजातियों में मुख्यतः छत्तीसगढ़ क्षेत्र की जनजातीय संस्कृति में चक्र को मांगलिक प्रतीक माना जाता है। धार्मिक व शुभ अवसरों पर स्वास्तिक के संग चक्र का अंकन शुभ माना जाता है। इसका अंकन गेरू से किया जाता है। जनजातीय धर्म संस्कृति में चक्र संसार, समय, सर्वव्यापक सत्ता का, प्रगति, सूर्य व अखण्डता का प्रतीक माना जाता है।

चित्र सं॰12 चक्र (बुन्देल जनजाति संस्कृति)

उपरोक्त प्रतीकों के अतिरिक्त चौक, अहपन व अल्पना आदि में यन्त्र आधारित मण्डलों का प्रयोग भी बहुतायत रूप से होता है।

चित्र सं॰– 13 चौक, अहपन व अल्पना में प्रयुक्त यन्त्र आधारित मण्डल

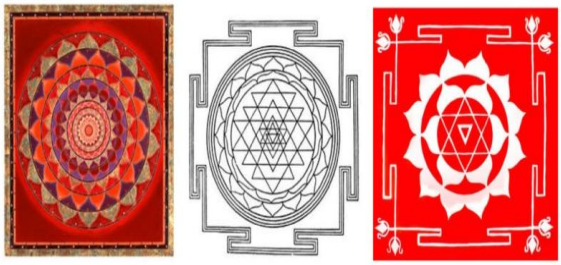

इस विशिष्ट कला का जीवित रहना आदिवासी समुदाय की पहचान व उनकी संस्कृति का जीवित रहना है। सभी कलात्मक गुणों से पूर्ण जनजातीय कला, कला जगत में अपनी विशिष्ट शैली के लिये सदा जानी जायेगी तथा आदिवासियों की आगामी पीढ़ी अपनी बहुआयामी कला का अनुसरण करके अपने उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर होंगे।

निष्कर्ष

जनजातियों में किसी भी बात को लेकर जो धारणायें बन जाती हैं। उन्हें सरलता से मिटाया नहीं जा सकता है। यदि कोई घटना पूर्व में घटित हुई होगी तो उनकी परिस्थितियां क्या होगीं? ये कहा नहीं जा सकता। जनजातीय जन इसे जादू, टोना–टोटका आदि से सम्बद्ध मान कर एक अवधारणा का सृजन कर उस पर विश्वास करने लगते हैं। जन साधारण के लिये ये तान्त्रिक प्रतीक एक ज्यामितीय प्रारूप मात्र हैं परन्तु साधारण समाज से सुदूर जंगलों में बसे जनजातीय समाज के लिये मात्र ज्यामितीय बिम्ब न होकर उनकी आस्था व विश्वास का एक रूप हैं। इन प्रतीकों को मान–सम्मान देकर वे अपनी प्राचीन रीतियों व अपने पूर्वजों के कथानकों का अनुसरण करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Rawson, Philip: 1973, The Art of Tantra, Vikas Publishing House Pvt. Ltd. India.*
2. *Bajpayi, Udyan: 2008, Narrative of a Tradition-Gond Paintings, Tribalwelfare department, M.P.*
3. *Misra, Umesh Chandra: 1984, Tribal Paintings and Sculptures, P.K. Published Distributars P. Ltd., Delhi.*
4. *Shah, Shampa: Tribal Arts and Crafts of Madhya Pradesh, Vanya Prakashan, Bhopal.*
5. *Swaminathan, J.: 1987, The Preceiving Fingures, All India Handi Crafts Board, New Delhi.*
6. *अग्रवाल, वासुदेव शरण : 1966, भारतीय कला, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी।*
7. *एलविन, वोरियरः गौण्ड एक जीवन, राज कमल प्रकाशन प्रा. लि., भोपाल।*
8. *एलविन, वेरियरः 2008, जनजातीय मिथक, आदिम जनजातीय कल्याण विभाग, वान्या प्रकाशन, आदिवासी विभाग, नई दिल्ली।*
9. *गुप्ता, नीलिमाः भारतीय लोक कला, स्वाती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
10. *चौरसिया, विजय : आख्यान, आदिवासी लोककला अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद्, भोपाल।*

11. *जोशी, महादेव प्रसादः 1989, हमारी संस्कृति के प्रतीक, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।*
12. *तिवारी, कपिलः 2010, सम्पदा, आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल।*
13. *भावसागर, वीरबालाः आदिवासी कला, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली।*
14. *श्रीवास्तव, ए. एल.: भारतीय कला प्रतीक, उमेश प्रकायान, इलाहाबाद।*
15. *चौमासा, जुलाई–अक्टूबर, 2011 व नवम्बर–फरवारी वर्ष– 28, संयुक्तांक–86/87.*
16. *लोकवार्ता– शोधपत्रिका, लोक चित्रों की प्रतीकात्मकता.*
17. *अक्टूबर, 2005, कला दीर्घा, अंक– 6.*
18. *अक्टूबर, 2013, कला दीर्घा, अंक– 27.*
19. *अप्रैल, 2014, कला दीर्घा, वर्ष–14, अंक– 28.*
20. *www.mptribalmeseum.com*
21. *www.en.wikipedia.org/wiki/Tribals*
22. *www.article.wn.com/view/2014/04/14In_a_tribe_of_its_own/*
23. *www.indiantribalheritage.org/?p=12031*